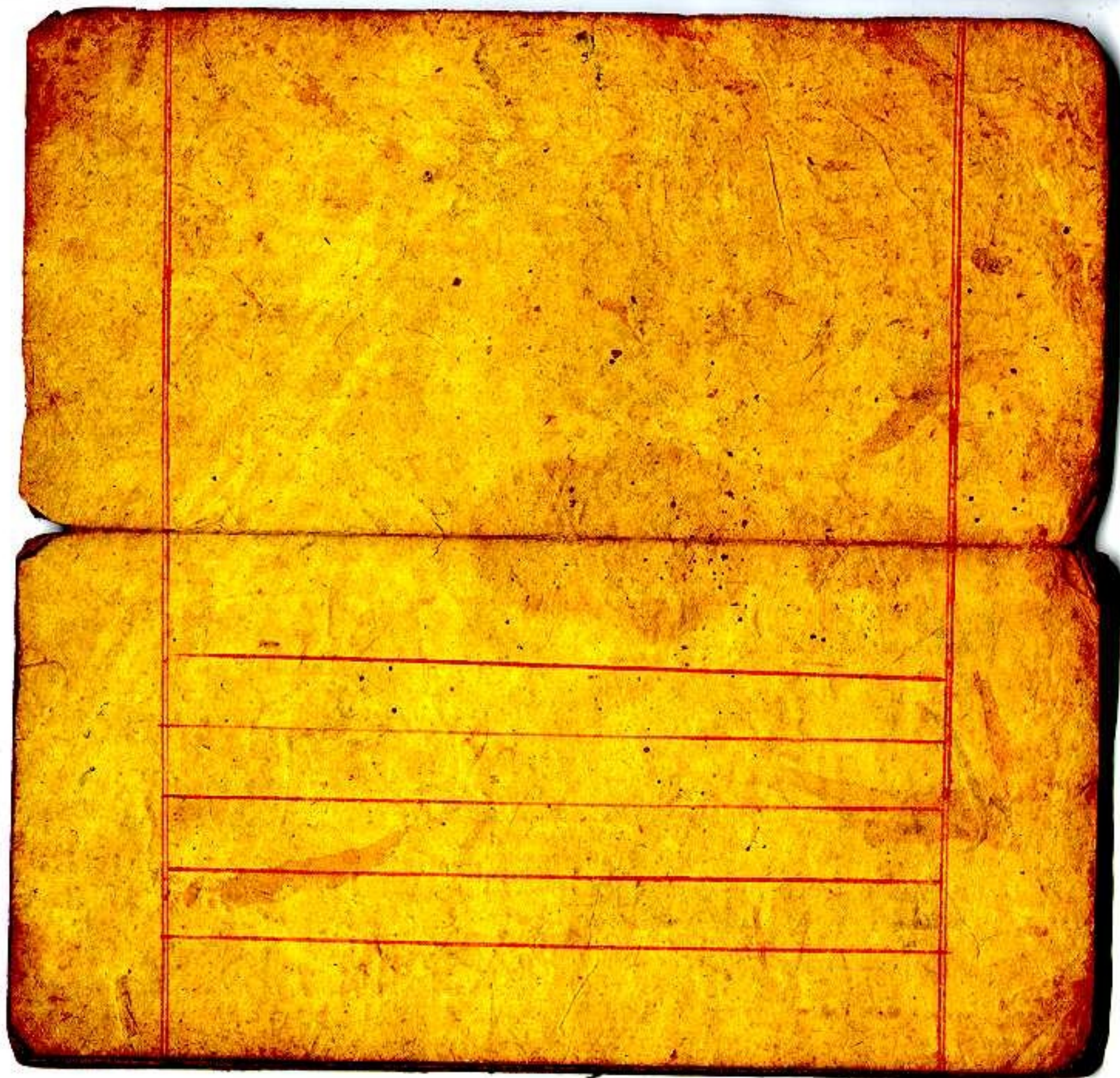


२ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीसरस्वती नमः

१ श्रीगणेशाय नमः ४ गणपतिं ब्रह्मणो विद्मः शिवाय
वन्दे देवि पुत्रमाहातमः माहात्म्यं यमाकृतं प्रोक्तं ह्यस्मात्
नाम यत्कृतं त्रिलोक्यैः सातवत्सु नृपैः त्रिनगं गणनाय
कं श्रद्धामात्रासुलं तं यः दृष्ट्वैनं कृतसंश्रितः यत्नस्तथा
कृपातं यः पठति तस्य कृतं नाना पुस्तुतः पुस्तुतां दत्तं



श्रीगणेशाय नमो ॥ श्रीसरस्वत्यै नमो ॥ श्रीगुरु
वा नमो ॥ असुनी भरनीः कृतिकारोहिणीः
मृगशिरा आरद्रा पुनर्वसु तिष्य अश्लेषा
मघा पूर्वाषाढा उत्तराषाढा हस्त चि
त्रा स्वाति विशाखा अनुराधा ज्येष्ठा मूल

पूर्वाषाढा उत्तराषाढा अवश धन्यवशाः शतभी
साः पूर्वमृगशिरा उत्तरमृगशिरा रेवति यतिसताइस
नक्षत्रा ॥ ॥ मेष वृष मिथुन कर्कट
सिंह कन्या तुल्य विदु धन मकर कुम्भ
मीन ॥ ॥ असुनी भरनी वृका कोपाय मेष
ती

॥ कृत्तिकानां त्रयोयाशे रौहिणि मृगसिला अर्ध
वृषा ॥ मृगसिला को अर्ध आरुद्रा युनर्व स्या
दत्र यं मिथुना ॥ ३ ॥ पुनर्व को या यशो म्य अश्लेष
कर्कट मघा पूर्व उज्जा को या यशसि ह ॥ ४ ॥
मिथुना चित्रा अर्द्ध कन्या ॥ ५ ॥ चित्रा को

इति विंशतिविंशति नया तुला ॥ ७ ॥ ॥ विसाखा
आषाढा अनुराधा जोषांते विद्यु ॥ ८ ॥ ॥ मूल अर्द्ध
को या यशसि ॥ ९ ॥ ॥ उज्जा को या यशसि
अर्धमकर ॥ १० ॥ धनेष्टा को अर्ध शठ इशा य
वभद्रा तिनया कुम्भ ॥ ११ ॥ ॥ पूर्व भाद्रपद को या य

उत्रभाद्रेवत्यामीन॥१२॥ ॥ मेघसिंहः

धनपूर्वः वृषकञ्चामक्रददिनेः मिथुनतुला

कुंभपद्मी॥ कर्कटविद्यामीनउत्ररे॥१॥

श्रालामेघः वृषावृषकाद्यामिथुन दाहाकर्कट

माघसिंह याथाकंशा रातानुलाः नोयाविद्य

भाषाठाधन वाजामक्र गोशाकुम्भ दाचामीन

जन्मसेकुत्तेवृषी दुतियंनस्तीनिमितिः

त्रितियंराजसम्मानं चतुर्थकलहभव वंचमंका

र्यसीधर्थ वदमंनस्तीनिमितिं सप्तमंराजदजाव

अष्टमं प्राणनासय नवमं कलेसमेव च दसमं क
र्यसीधर्थं रुडयकादसेजयं द्वादसेन मृत्युरेव
संसया ॥ ॥ आनन्द कालदंद धुमाश
यजायति सोमे प्राक्ष ध्वज जीवसां वज्र
महुर वज्र मित्र मान यद्ग्राख्य लम्

क उत्थात मृत्यु कारा सीद्धि शुभ अमृ
त मूल ल गद्यष्य मातेग राक्षस लल
स्थिर वर्द्धमान ॥ ॥ असुनी आइत्यवारे
रा सोमे मृगसीर तथा अश्वे खाभौ मवारेण
बुधहस्ता प्रकिर्तिष्य अनुराधा गुरुवारेण

ॐ
शुक्ले उखादयो शानीसमिखाचैव ज्ञानंदादिज
पथाकत्रम ॥ ॥ मेखोदावृष्यपन्नः मिथुनेन
वकसूतवाः ककेद्वयैरसेसिंहेः कन्यायां दसवर्जिताः
तुल्यैः त्रीनी ज्येष्ठौ सप्तः पुनेव्यदमत्रेवस्तः कुमे
रुडमीनेस्त्यः इति च नु घातक ॥ ॥

अथ जोगीनीदशा मंगला विंगला धान्य भा
गरी भद्रिकाः उल्का सीढा संकता जन्मन
क्षत्रं विजुक्तंः शुद्धे च भाषितंः सेषितंः सेषरकर
ह्यामंगला दुर्दृष्ट्या विंगलाः यहि विधिल्याजानु म
गला मंगलानेन्द्रजस्तु सुखदायनीः विंगलाः

तनतोवाधिः मरुतोदुषसंभव धान्यधानसुहृ
 खं धरुयसीमागतकारिणीः भ्रामरीजन्मभूमीप्री
 भ्रमणे सर्वतोदिसं भद्रिकासुषसंतिविलासाव
 सदायनीः उल्काराजेधनरोग्यहारीनीचमहाद
 य सिद्धाचसाधय कार्यं नृपज्ञानंतुराज्यदा

शंकतासंकतावाधिः मरुतोदुषसंभव धान्यधानसुहृ
 णविनानुनं कदाचित्प्ररशंभवत् दुःखमासु
 खमादाय समादुष्टकूलप्रदा ॥ इतिजोगीनीदे
 शज्ञानम् ॥ ५ ॥ यमे आ गौ वृत्ते
 म गे दित्य युष्य तिष्य सार्व मर्धा

मये अग्नि करे विद्यां स्वाते
विशावां मैत्रे रात्रे मले तोय
विश्वे कर्णे वासवे वरुने पुमां
उमां वैष्णवे ॥ ॥ मैत्राणि भौमे व
षे तैलिकुक्के कव्ये जिवत्पा वृच इन्दु

कर्किः सिंहै रभा नः शुक्रा विभीने ॥
अत्रादि वास्वः मकरै र्द्यौ देवा ॥ ॥
जन्म ते श्रो पंर मसिरः षष्टे नवमगा
निजे पीठः श्रौथीः बाहौ पावक लिख
सा तो सद्या रौः हि दय क्रौ वैचे दस

म गौ थो दो श्रो हा तः हा त को नु पु र्या
वै आ सः पा व क लि सा पि षी नी र आ
स सिर को र नुः द र्य व द वैः हि द य
को व नु व ह शु ष पा वेः य ह वि छि रे
ः र नु मा कि वा त ॥ — ॥ पा व क लि सा पि

षी नी न आ सः य ह वि छि य र च नु मा कि वा त ॥

54



इ कं शुभ हौं ॥ अल १० ॥ अमं य या डा डा
मि न यु क या शुभ न यु य इ ला ॥ ॥ श्री श्री
ना त्री य नि श्री शुभ हौं ॥ अल ७ ॥ अमं य
या डा डाः सा वि क या शुभ न यु य इ ला ॥
यि क न अ य म इ ॥ ॥ श्री अ हं कालः ना

ना ह मि शुभ हौं ॥ अल ७ ॥ अमं य या डा
डाः वा ग्ग ल भा त स्या क यु य इ ला ॥ ॥ श्री
क न वी लः ना त्री य नि रु रु शुभ हौं ॥ अल ८
॥ अमं य या डा डाः मि र वा सः पु न डा डा या
यु य इ ला ॥ ॥ श्री आ न आ न व वं डा गी

रुतञ्जल हौं ॥ अल २॥ अमं वया डा डाः
लंख समं वया डा डा तान कः व्याथ स्या क
याः मठन मधु या त सी नायी इला ॥ ॥
२ॐ हल नं कालिः अरु माता कालि श्री अ
हौं ॥ अल २० ॥ अमं वया डा डाः आल पः या

य इलाः दुर्दि समं वया डा डाः दुर्दि न दा
या डाः आल पः या य इला ल त न पु न या ॥ ॥
२ॐ हौं ई हौं ई क न कालि मन रुतञ्जल
हौं ॥ अल १२ ॥ अमं वया डा डाः मठा त य
तः याता ला य पु य इलाः नु गल सञ्जन

पुय मा लयः पाय इला ॥ ॥ कुं वाग्नु
विदंगः सा गु विरंगः गलु च नाज्ञा ह न
अ हों ॥ अल ७ ॥ अ म गु न अ न पु या डा
विज्ञान इला ॥ ॥ नि नि व दून सि धी र
गतिः गु नु ज्ञा ॥ अल २ ॥ अ म गु या डा डा

अ न पु या डाः ना ल न इ ला ॥ ॥ कुं ग
दं ग्य ताय कुं कुं कुं कुं ना नां य नि ग्री कुं अ
हों ॥ अल १००६ ॥ अ म गु या डा डाः ग नि र
ल या न पु नु पु ज्ञा या डा डाः म ह नि रु या
डाः रोग दि मा डाः पु ज्ञा या डा डाः अ म

हनी रुया डः ॥ २० ॥ कलमया डा डाः पुडा
विधीया डा डाः ॥ २१ ॥ महनिका काया डाः द्वि
थं थमने नित्यः ला क व स डायी डा ॥ २२ ॥
महनीः लमिग तय म डः जा का ग स वा
या डा तय माल ॥ २३ ॥ मंशयाय थुन का डाः

लिपत स ग्री व ड डा गानि या त म त वि
य ड ला या त ड ॥ २४ ॥ मंशयाय व ल गः म व
न स न क म ड ॥ २५ ॥ दे व या कः ग न क का
म म ड ॥ ॥ ३ ॥ गं ग म न कं कु गी थी वि
ना श्री गं हों ॥ अल २ ॥ २० ॥ मंशया डा डा

हुँ गल म म थी स्यैः नित ख का मा डाः धाना
स न या डाः गुँ म थी प कः अल प म मँ गु या
डा डाः गुँ न पु या डाः मु का वु प म रु ए य वा
ड झ मिसा ता न केः मा का वु प रु यी डाः म
व थि य म डः गुँ नान ड म य म ड ॥ ॥ ॥

हुँ कं कं जी गं डं डं हौं डं हौं डं गुँ हौं ॥ ५५
३० ॥ ५५ मँ गु या डा डाः गुँ व क म मँ गु या डा डा
५५ व म य जा या डा डाः म न वि पा य वा १
ल वा ल ए न मा य डः मि गु म न के व स या
नाः ५५ पा य व ल सः म व क ड म डः थि

मिग्नन के वस माय ॥ ॥ श्री ह
॥ श्री मनल हलि श्री ग्व हों ॥ अल १८
॥ थ मं गु मा डा डा ॥ गु ल डा डा माः पु मा डा डा
प इ लाः गु थं पु पः वह द्वि जं पु पः द्वि न
नी पाल खान पु प इ ला ॥ ॥ श्री जाल

जाल ग्व न ना ना प नी रु न ग्व हों ॥ अल १३ ॥
थ म गु मा डा डाः न डा घाल स गु हा पा डा डा
न सीः थ मं गु न ग्व न पु मा डाः गुं ग ल माय
ः गु थं पा प म इः व ल द्वि माय मालः स ल
गु न स न गु ति ग्व मा डा माय माल ॥ ॥

२३ं रुं मा नाना गी नी रुं सं ड डं ग्म
हैं ॥ अत २३ ॥ अ मं गु या डा डाः सि क्र ल
ग अ मं गु या डा डाः आदि ने वाल ख नु पु
जा पा यः अ सि क्र ल ग पु जा या डा डाः ग्म
न पु या डाः म न डा ५ यो न वि या डा ना ना म

नि या ना म का या डाः पु जा या यः अ सि क्र
ल न अ म न नि य ला क व सं डा मीः अ या य
व ल सः गुं के ठ म डः थी मं म डः अ सि क्र
लः ल मि स न म म डः आ का ग सं न मः दि
थं नि य ड ल ॥ ३३ ॥ अ या य या सा या य ना म

आशा सहकाथि

2077

I

ASHA ARCHIVES